होगी । जो रकम दी जायेगी वह इन्स्टालमेंट्स में दी जायगी या एकमुश्त दी जायगी ।

श्री ब० रा० भगत : यह प्रश्न कर्मचारियों से नहीं जवानों से संबंधित है ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : मैं जवानों के बारे में ही पूछ रहा हूं । कर्मचारियों में वे भी आ जाते हैं ।

श्री ब० रा० भगत : अभी कितने हैं इस की संख्या तो मालूम नहीं है । जैसे जैसे उन के क्लेम्स आयेंग उन पर छान बीन कर के उन को रुपया दिया जायगा । अभी तो यह स्कीम बतलाई गई है । जिस के आधार पर उन को रुपया दिया जायेगा ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : जो रुपया उन को पहले अनुदान के रूप में या सेवा के रूप में दिया गया था वह इस बीमे की रकम में से काटा जायेगा या नहीं ।

श्री ब० रा० भगत : यह अलग बात है । यह उन का बीमा है जिस की पालिसी का रुपया उन को दिया जायेगा । इस आधार पर अनुदान की बात अलग है ।

श्री कछवाय : मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार के पास यह सूचना आई है कि जिन लोगों की बीमा पालिसी है उन में से कितने जवान लापता हैं ।

अध्यक्ष महोदय : यह तो उन्हों ने बतलाया कि जब लोग दरख्वास्त देंगे तो उस से पता चलेगा ।

श्री ब० रा० भगत : इस के लिये डिफेंस मिनिस्ट्री से बात चीत हो रही है । वह लिस्ट देंगे । अभी तो मैं ने जो स्कीम एल० आई० सी० ने मंजूर किया है उस का विवरण रक्खा है ।

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : क्या सरकार के ध्यान में यह बात आई है कि इस परिस्थिति में जिन व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है उन्हें बीमा निगम की ओर से जो रुपया दिया जाता है उस के लेने में काफी कठिनाई होती है, और क्या ऐसी परिस्थिति में जवानों के लिए कोई विशेष सुविधा प्रस्तुत करने के प्रश्न पर सरकार ने विचार किया है जिस में उन के परिवार वालों को आसानी से रुपया मिल सके ।

श्री ब० रा० भगत : हर कोशिश की जायेगी कि इस रुपये के देने में कोई देर न हो । एक बार अगर डिफेन्स मिनिस्ट्री की तरफ से वह लिस्ट आ जायेगी कि इतने लोग लापता हैं या मर गये हैं तो उन को १०,००० रु० देने में देर नहीं होनी चाहिये । इस की कोई वजह नहीं है कि देर हो ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय : जितने जवान मर गये हैं या गायब हो गये हैं उन में से कितनों के परिवारों ने दरख्वास्त दी है कि उन को रुपया मिलना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय : यह तो कम्पनी को देखना है ।

चेचक उन्मूलन सप्ताह

*२४३. **श्री भी० प्र० यादव** :
श्री ओंकार लाल बेरवा :
श्री विश्राम प्रसाद :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री द्वा० ना० तिवारी :
श्री रा० गि० दुबे :

क्या **स्वास्थ्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत सरकार द्वारा २५ सितम्बर, १९६३ से चेचक उन्मूलन सप्ताह मनाया गया था ;

(ख) यदि हां, तो भारत सरकार ने कितने टीके राज्य सरकारों को भेजे और उन में से कितनों का उपयोग किया गया ; और

(ग) राज्य सरकारों ने इस में कितना अंशदान दिया ?

स्वास्थ्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० द० स० राजू) : (क) जी हां ।

(ख) राष्ट्रीय चेचक उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी राज्य सरकारों एवं संघ क्षेत्रों को टीके लगाने के लिए निरन्तर फ्रीज़ ड्राइड वैक्सीन भेजी जा रही है । "चेचक उन्मूलन सप्ताह" के लिये विशेष रूप से कोई वैक्सीन नहीं दी गई, इसलिये उस अवधि में जो वैक्सीन दी गई और जिस का उपयोग किया गया उस के आंकड़े अलग से देना संभव नहीं है ।

(ग) वास्तव में यह कार्यक्रम राज्य सरकारें ही चला रही हैं । तो भी वर्तमान व्यवस्था के अनुसार चेचक उन्मूलन कार्यक्रम पर होने वाला सारा अनावर्ती खर्च और आवर्ती खर्च का ७५ प्रतिशत उन को केन्द्रीय सरकार देती है ।

इस कार्यक्रम के लिए वैक्सीन सोवियत सरकार से उपाहर के तौर पर मिली है और वह राज्य सरकारों को मुफ्त दी जा रही है ।

The Minister of Health (Dr. Sushila Nayar): (a) Yes, Sir.

(b) Under the National Small-pox Eradication Programme, freeze-dried vaccine is being continuously supplied to all the State Governments and Union Territories for carrying out vaccinations. No special supply of Vaccine was made in connection with celebration of the 'Small-pox Eradication Week' and it is, therefore not possible to give separate figures in respect of the vaccine supplied and used during that period.

(c) The programme is being actually implemented by the State Governments. However, in accordance with the existing arrangements, the entire non-recurring and 75 per cent of the recurring expenditure incurred by the State Governments, on the Small-pox Eradication Programme is re-imbursed by the Central Government.

The Vaccine required for the Programme has been received as gift from the Government of U.S.S.R. and is being supplied to the State Governments etc. free of charge.

श्री ओंकार लाल बेरवा : मैं जानना चाहूंगा कि चूंकि कुछ राज्यों में चेचक के टीके लगाने पर भी ज्यादा से ज्यादा चेचक लोगों को निकली है, तो क्या इस दवा के अन्दर कुछ परिवर्तन किया गया है जिस से चेचक न निकले ।

डा० सुशीला नायर : चेचक का टीका लगाने के बावजूद मद्रास शहर में चेचक हुई है । मद्रास शहर में यह पाया गया कि उन के पास लिक्विड लिम्फ़ कुछ कम था या शायद कुछ और कारण रहा हो जिस की वजह से पानी डाल कर या सैलाइन डाल कर उसे डाइल्यूट कर लिया गया । इस से उस का जो प्रभाव होना चाहिये था वह नहीं हुआ । इस अनुभव के बाद हम ने लिक्विड लिम्फ़ का इस्तेमाल इस कैम्पेन में बन्द कर दिया है और सब जगह फ्री ड्राई वैक्सीन का उपयोग शुरू हो गया है ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : मैं जानना चाहूंगा कि राज्य सरकारों को जो मदद मिलनी चाहिये थी क्या उतनी मदद इस में दी गई है ।

डा० सुशीला नायर : राज्य सरकार के द्वारा ही यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है । जैसाकि उपमंत्री जी ने बतलाया है कुछ राज्य सरकारें तेज़ी से काम करने वाली हैं और कुछ ज्यादा शिथिल हैं । यह फ़र्क तो रहता ही है ।

Shri Vishram Prasad: What is the percentage of the area or population so far inoculated in the country and may I know how long it will take the Government to cover the whole country?

Dr. D. S. Raju: So far about 137 million people have been vaccinated and re-vaccinated—primary and secondary. The percentage comes to 30 to 35.

Shri Vishram Prasad: By when will it be completed?

Dr. D. S. Raju: By March 1965 we hope to complete the whole programme.

Shri D. N. Tiwary: May we have a comprehensive report of the number of persons vaccinated in all the States and the amount which has been reimbursed to the States so far?

Dr. Sushila Nayar: Of the expenditure, hundred per cent of the non-recurring and 75 per cent of the recurring expenditure is being met by the Government of India. If we add to that the cost of the vaccine which is free, the State Governments are not spending more than, say, 10 to 15 per cent of the cost.

Mr. Speaker: Shri Parashar.

Shri D. N. Tiwary: What is the total amount spent by the Centre?

Dr. Sushila Nayar: Re-imbursement is being made....

Mr. Speaker: I did not allow that question.

श्री पाराशर : क्या लिम्फ को पानी डाल कर डाइल्यूट करने का प्रयोग पहले सिद्ध कर लिया गया था और प्रयोग करने के बाद लगाया गया था ?

डा० सुशीला नायर : हमें मालूम नहीं है। किसी ने गलती की थी, अपनी बुद्धि लगाई थी, जो कि नहीं लगानी चाहिए थी ।

Shri Warior: May I know whether it is the intention of the Government to terminate the working of the field staff by 31st March, 1964 and disband the whole thing?

Dr. Sushila Nayar: The special staff that has been recruited for the small-pox eradication campaign will be wound up, by March 1965, but there will be certain maintenance staff which will be continued for the normal vaccination activities even afterwards.

श्री गुलशन : मंत्री महोदय ने बताया है कि चेचक विनाश के लिये जो दवा दी जाती है वह राज्य सरकारों द्वारा इस्तेमाल की जाती है । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या राज्य सरकारें उस दवा के इस्तेमाल के बाद केन्द्रीय सरकार को कोई इनफारमेशन देती हैं ?

डा० सुशीला नायर : जी, यह एक सारा सिलसिला जारी है । हर जिले में कितने टीके लगाए गए, उन में प्राइमरी कितने थे और सैकिंडरी कितने थे, यह सारी की सारी इनफारमेशन लगातार केन्द्र के पास पहुंचनी चाहिए ऐसा इन्तिजाम है । लेकिन कहीं से ठीक तरह से आती है, कहीं कहीं कुछ ढिलाई होती है ।

Power Failure in Delhi

*244. **Shri D. C. Sharma:** Will the Minister of **Irrigation and Power** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 218 on the 22nd August, 1963 and state:

(a) the further progress made in implementing the recommendations made by the three committees set up in connection with power breakdowns in Delhi; and

(b) the extent of improvement brought about by implementing the said recommendations?

The Minister of Irrigation and Power (Dr. K. L. Rao): (a) and (b). A statement giving the required information is laid on the Table of the House. [*Placed in Library, See* No LT-1954/63]. I may further add that in the areas where rectification of defects was carried out, before August 1963 the interruptions up to 5 minutes were 57 per month and now they are reduced to 14; interruptions of electricity from 5 minutes to 1 hour used